कामयाब लोगों के चेहरों में दो चीज चुपी होती है। पहला चुप्पी और दूसरी मुस्कुराहट।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह

देहरादून, बृहस्पतिवार 28 नवंबर 2019

पेज थ्री
www.page3news.in

बाजार की उलटबांसी

हकीकत यह है कि शेयर बाजार को अर्थव्यवस्था का आईना समझने की धारणा ही गलत है। आर्थिक वृद्धि के आंकड़ों का शेयर बाजार पर असर जरूर पड़ता है लेकिन शेयर बाजार के चढ़ने–उतरने की वजहें अक्सर अलग होती हैं।

मनीषा भट्ट

अर्थव्यवस्था पर नजर रखने वाले इन दिनों उलझन में हैं। वे समझ नहीं पा रहे कि अभी जब देश की आर्थिक विकास दर को लेकर आशंकाएं व्यक्त की जा रही हैं तो शेयर बाजार उछालें क्यों मार रहा है। जीडीपी ग्रोथ रेट साल की तीसरी तिमाही में रिकॉर्ड निचले स्तर पर चली गई है। रेटिंग एजेंसियां आर्थिक वृद्धि दर का अनुमान घटा रही हैं। लेकिन बीएसई और एनएसई का ग्राफ बीच के छोटे–मोटे उतार के बावजूद लगातार ऊपर की ओर है। रेटिंग एजेंसी मूडीज ने साल 2019 के लिए भारत का आर्थिक वृद्धि दर अनुमान घटाकर 5.6 फीसदी कर दिया है। 'ग्लोबल मैक्रो आउटलुक 2020–21' में उसने 2020 और 2021 में ग्रोथ रेट क्रमशरू 6.6 फीसदी और 6.7 फीसदी होने की उम्मीद जताई है, लेकिन साथ में यह भी जोड़ा है कि बीते दिनों की तुलना में आर्थिक सक्रियता कम ही रहेगी।

मूडीज ने भारत सरकार की सॉवरेन रेटिंग्स को भी न्यूट्रल से बदलकर नकारात्मक कर दिया था। सवाल है कि घरेलू और विदेशी निवेशक क्या रेटिंग एजेंसियों को गंभीरता से नहीं लेते, या फिर एजेंसियों का आकलन संदिग्ध है? हकीकत यह है कि शेयर बाजार को अर्थव्यवस्था का आईना समझने की धारणा ही गलत है। आर्थिक वृद्धि के आंकड़ों का शेयर बाजार पर असर जरूर पड़ता है लेकिन शेयर बाजार के चढ़ने–उतरने की वजहें अक्सर अलग होती हैं। शेयरों पर कई स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय तत्वों का प्रभाव तो पड़ता ही है, खास कंपनियों से जुड़ी खबरें भी इसमें इंजन की भूमिका निभाती हैं।

अभी जो तेजी दिखाई पड़ रही है, उसका फैलाव सारे शेयरों तक नहीं है। कुछ खास शेयर ही ऐसे हैं, जो लगातार मजबूती दिखा रहे हैं। इसके अलावा बड़ी सरकारी कंपनियों में विनिवेश का फैसला भी शेयर बाजार के लिए खुशहाली लेकर आया है। शेयर बाजार के खिलाड़ी मानकर चल रहे हैं कि भारतीय इकॉनमी का सबसे बुरा दौर बीत चुका है। किसी बड़े बदलाव के संकेत भले ही न हों पर उन्हें इसकी रिकवरी का भरोसा है। यह शेयर बाजार का चरित्र है कि जब मुनाफे कम हो रहे होते हैं तो स्थानीय म्यूचुअल फंडों और ग्लोबल निवेशकों के जरिए चुनिंदा शेयरों में गति आती रहती है।

बाजार कई चीजों पर पैनी नजर रखता है। जैसे पिछले साल लगा कि एनबीएफसी संकट बहुत ज्यादा गहरा है, लेकिन अब यह एहसास होने के बाद कि नीति–निर्माता उनके बारे में सोच रहे हैं, शेयर बाजार इस तरफ से निश्चिंत दिख रहा है। वैसे, बाजार की यह तेजी सिर्फ भारत में नहीं है। कई और शेयर बाजार भी रिकॉर्ड स्तर पर हैं। पूरी दुनिया में और भारत में भी नरम ब्याज दरों की नीति ने उत्साह बढ़ाया है। हालांकि यहां यह जोड़ना जरूरी है कि शेयर बाजार लंबे समय तक बुनियादी आंकड़ों के खिलाफ नहीं जा सकते। बाजार में तेजी लंबी चले, इसके लिए अच्छी आर्थिक वृद्धि सुनिश्चित करना जरूरी है।

देने का सुख!

ई. क्लीनवाचर

धर्म-दर्शन

हमारी परंपराएं कहती हैं कि जब भी किसी को कुछ देने का मौका आए, तो चूकना नहीं चाहिए, क्योंकि इससे यह पता चलता है कि आप किस तरह के इंसान हैं और आपके दूसरों के साथ कैसे रिश्ते हैं। और जिस वक्त आप दे रहे हैं, उस वक्त माहौल कैसा है, और वस्तुतरू सामने वाले की जरूरत क्या है। जब भी आप किसी भिखारी के पास से उसके फैले हाथों की उपेक्षा करते हुए निकल जाते हैं, तो आप अपने ही बारे में एक राय बना रहे होते हैं, या फिर यह जता रहे होते हैं कि भिखारी के बारे में आपकी क्या सोच है। हम अपने ही नजरिए से भिखारी के लिए राय बना लेते हैं। हम में से बहुत कम लोग हैं, जो उसे कुछ नहीं देना चाहेंगे। चाहे सांत्वना के दो बोल ही सही, देंगे जरूर। लेकिन मैं भिखारी को खाना देने की बजाय उसे मछली पकड़ना सिखाना ज्यादा बेहतर समझता हूं।

संपादकीय

बदलाव का जोखिम

राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफे की घोषणा कर असमंजस की स्थिति को समाप्त कर दिया है। इस आशय वाले अपने पत्र में उन्होंने लिखा है कि प्रतिद्वंद्वियों को हम तब तक नहीं हरा सकते जब तक सत्ता की चाहत छोड़कर विचारधारा की एक बड़ी लड़ाई लड़ने का मन नहीं बनाते। कांग्रेस को लेकर देशभर में उत्सुकता यह है कि पार्टी का नेतृत्व गांधी–नेहरू परिवार से बाहर के किसी व्यक्ति के हाथ में जाने पर क्या वह एकजुट रह पाएगी? बीती आधी सदी का पार्टी इतिहास यही बताता है कि जब–जब उसकी कमान गांधी–नेहरू परिवार से बाहर गई, पार्टी खंडित हुई।

पार्टी के भीतर कई समानांतर सत्ताएं उठ खड़ी हुईं और गांधी–नेहरू परिवार के वफादार लोग पार्टी अध्यक्ष के लिए प्राणांतक सिरदर्द बन गए। इसीलिए धीरे–धीरे करके यह मान लिया गया कि कांग्रेस तभी एकजुट रह सकती है जब गांधी–नेहरू फैमिली का छाता उस पर तना रहे। पार्टी को वोट भी अब तक काफी कुछ इस परिवार के करिश्मे से ही मिलते रहे हैं। इसके अलावा सत्ता भी इसके बचे रहने की एक बड़ी वजह बनी रही। लेकिन अभी हालात एकदम बदल गए हैं।

बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों ने वोटरों का मिजाज बदल दिया है। लोगों को पता है कि कौन उनसे निरंतर संवाद कर रहा है। किससे वे अपने दुख–सुख का साझा कर सकते हैं। यानी पार्टियों का सिर्फ चुनाव में दिखना काफी नहीं है। हर दिन की सक्रियता उनके लिए जरूरी हो गई है। इसके लिए मजबूत जमीनी संगठन उनके पास होना चाहिए, जिसे खड़ा करना कांग्रेस भूल चुकी है। स्थानीय इकाइयों के चुनाव के नाम पर वहां बस रस्म–अदायगी होती है।

सरकार बेरोजगारी दूर करने की चुनौती से लगातार जूझ रही है। इसलिए उसने अगले पांच सालों में इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने पर 100 लाख करोड़ रुपये खर्च करने का फैसला किया है।

मजबूती की बुनियाद

मनोज शर्मा

मोदी–2.0 सरकार के पहले बजट का मकसद अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों को एक समेकित रूप देना है। सरकार ने फरवरी में पेश अपने अंतरिम बजट में अनेक कार्यक्रमों को जमीन पर उतारा था। अब उन्हें एक निश्चित दिशा और मजबूती देने की कोशिश की गई है। इस बजट का जोर इस बात पर है कि साधन संपन्न वर्ग से टैक्स वसूल कर और विनिवेश के जरिए पूंजी जुटाकर उसे आमजन के लिए योजनाओं पर खर्च किया जाए। बजट में बुनियादी क्षेत्र को खासी तवज्जो दी गई है क्योंकि इस सेक्टर में रोजगार पैदा करने की संभावनाएं काफी ज्यादा हैं। सरकार बेरोजगारी दूर करने की चुनौती से लगातार जूझ रही है। इसलिए उसने अगले पांच सालों में इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने पर 100 लाख करोड़ रुपये खर्च करने का फैसला किया है। इससे संबंधित प्रॉजेक्ट गांव और शहर के बीच खाई को कम करने का काम करेंगे।

बजट में सड़क, वॉटरवे, मेट्रो और रेल के विकास के लिए कई प्रावधान किए गए हैं। जाहिर है ये पूंजी निवेश को आकर्षित करने में भी अहम साबित होंगे। इसके लिए कई क्षेत्रों में एफडीआई बढ़ाने की बात भी कही गई है।

सरकार उड्डयन, मीडिया, एनिमेशन और बीमा में एफडीआई बढ़ाने की संभावनाओं पर विचार करेगी।

बीमा क्षेत्र में तो वह 100 प्रतिशत तक एफडीआई चाहती है। निवेश बढ़ाने के लिए प्रवासी भारतीयों के निवेश के रास्तों को आसान किया जाएगा। सरकार के सामने एक और चुनौती बाजार में मांग पैदा करना और रीयल, ऑटोमोबाइल और अन्य क्षेत्रों में कायम शिथिलता को तोड़ना भी है। इसे ध्यान में रखकर होम लोन के ब्याज पर मिलने वाले इनकम टैक्स छूट को साल में 2 लाख से बढ़ाकर 3.5 लाख रुपये कर दिया गया है। यह छूट 45 लाख रुपये तक के मकान पर मिलेगी। इससे रीयल एस्टेट सेक्टर को प्रोत्साहन मिलेगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 1.95 करोड़ मकान बनाने का प्रस्ताव भी इस क्षेत्र में आए ठहराव को दूर करेगा। बैंक ज्यादा से ज्यादा ऋण दे सकें, इसके लिए सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 70,000 करोड़ रुपये की पूंजी डालेगी। वित्त वर्ष 2019–20 के विनिवेश लक्ष्य को बढ़ाकर 1,05,000 करोड़ रुपये किया गया है। अंतरिम बजट में इसे 90,000 करोड़ रुपये रखा गया था।

रेलवे में साल 2030 तक 50 लाख करोड़ रुपये के निवेश की जरूरत होगी। रेलवे स्टेशनों के आधुनिकीकरण के लिए अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत की जाएगी जिनके लिए पीपीपी मॉडल के जरिए निवेश किया जाएगा। सरकार नई शिक्षा नीति लेकर आएगी। विदेशी छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए आकर्षित किया जाएगा। स्वच्छ पर्यावरण को बढ़ावा देना भी बजट का प्रमुख अजेंडा है। इसमें इलेक्ट्रिक कारों को लोकप्रिय बनाने के लिए सरकार ने इन पर जीएसटी की दरों में कटौती की है। साथ ही इलेक्ट्रिक कार खरीदने पर इनकम टैक्स में भी छूट दी जाएगी। देखना है, बजट विकास दर को कितना आगे ले जाता है।

अष्टयोग-4878

	5	4	3			
	34		**30**		**28**	2
7		1	6		5	4
	25		**33**	6	**41**	
1	3	2		5	7	
	28	5	**33**		**38**	3
4			6		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4877 का हल

7	2	1	6	3	5	4
2	**34**	7	**30**	4	**28**	2
6	5	4	3	2	7	1
3	**30**	6	**32**	6	**39**	5
1	3	2	4	5	7	6
5	**28**	5	**33**	7	**38**	3
4	5	3	6	1	2	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग
हम भी देख सकते हैं सौ वसंत

बालमुकुंद। बबली को जैसे ही छींक आई, दादी बोल पड़ीं, 'सत्तन जी। सौ साल जियो।' बबली ने नाक मसलते हुए कहा, 'दादी, यहां तो सत्तर पार करना ही मुश्किल है, सौ साल कैसे जियेंगे?' भारत में पुरुषों की औसत आयु 68.56 वर्ष और महिलाओं की थोड़ी ज्यादा 70.5 वर्ष है। यह विश्व की औसत मानव आयु से कम है, जिसमें अफ्रीका के लेसोथो और सिएरा लियोन जैसे अति पिछड़े देश भी शामिल हैं, जहां के अधिकतर लोग जीवन के 55 वसंत भी नहीं देख पाते। औसत आयु की गणना किसी देश, समाज या समुदाय में उसकी जन्म और मृत्यु की दर के आधार पर करते हैं। इसी से यह अनुमान लगाया जाता है कि वहां जन्म के समय किसी शिशु के कितने समय तक जीवित रहने की आशा है। इसीलिए इस औसत आयु को जीवन प्रत्याशा भी कहते हैं। आज मानव की औसत जीवन प्रत्याशा या आयु लगभग 72 वर्ष है। पुरुषों की 70 वर्ष और स्त्रियों की 75 वर्ष। अलग–अलग देशों में औसत आयु अलग–अलग है। सबसे ज्यादा दीर्घायु जापान, स्विट्जरलैंड, स्पेन, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस और इटली के लोग होते हैं।